महारास ये दिव्य जगत का सर्वोच्च कोटि का रस है। प्रथम हम मायिक सुख के स्तर के बारे में विचार करते है।

पृथ्वी पर भी लोगों के कई स्तर देखने को मिलते है। किस व्यक्ति को सबसे सुखी कहा जा सकता है? हिंदू परिभाषित करता है कि इस तरह के राजा का सुख सबसे ऊपर है, जो पूरी धरती का एकमात्र शासक हो, प्रजा जिसके अनुकूल हो, जो युवा हो, शक्तिशाली हो, सुन्दर हो, स्वस्थ हो, बुद्धिमान हो, सभी गुण उसमें विद्यमान हो। ऐसे राजा के सुख को भौतिक आनंद की सीमा माना जाता है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

हिंदू का कहना है कि इस तरह के हजारों राजाओं का सुख स्वर्ग के पदानुक्रम में सबसे कम सुख: मानव गंर्धव लोक (स्वर्ग का पहला स्तर) के सुख के बराबर है। इस तरह के हजारों मानव गंधर्व लोक का सुख देव गंधर्व लोक के सुख के बराबर है। ऐसे हजारों देव गंधर्व लोक का सुख एक पितृ लोक के सुख के बराबर है। इस तरह के हजारों पितृ लोक का सुख एक कर्म देव के सुख के बराबर है। इस तरह के हजारों कर्म देव लोक का सुख एक अजनाज देव लोक के सुख के बराबर है। इस तरह के हजारों अजनाज देव लोक का सुख एक देव लोक के सुख के बराबर है। ऐसे हजारों देव लोकों का सुख एक इंद्र के सुख के बराबर है। इस तरह के हजारों इंद्र का सुख एक ब्रृहस्पति के सुख के बराबर है। ऐसे हजारों ब्रृहस्पति का सुख एक प्रजापति के सुख के बराबर है। ऐसे हजारों प्रजापति का सुख के एक ब्रम्हलोक के सुख के बराबर है।

लेकिन ब्रम्हलोक तक माया का साम्राज्य है। ब्रम्हलोक तक जाकर वापस आना पडता है और वो भी कुत्ता बिल्ली आदि हीनतर योनियों में डाल दिया जाता है। जब स्वर्ग सम्राट इंद्र को कुत्ता बिल्ली आदि बन के एक एक रोटी के लिए दर दर घुमना पडता होगा तो कैसे लगता होगा? फिर यह ध्यान में रखना

चाहिए कि ब्रम्हलोक तक मन की आंतरिक समस्याएं हल नहीं होती। वहा के लोग भी काम, क्रोध, लोभ, इर्षा, द्वेष आदि मानसिक रोगों से अशांत एवं अतृप्त रहते है। इसलिए माया के अंडर के सब लोगों का अंदर से एक सा हाल होता है। यहा एक भिखारी हो या राजा हो या ब्रह्मलोक निवासी हो सब अपने से आगे वाले को देखकर एकसमान रूप से अशांत एवं अतृप्त है। सबको शाश्वत सुख की तलाश हैं। सभी अपने कर्मों के अनुसार स्वर्ग, पृथ्वी और नरक के माध्यम से ऊपर और नीचे घूमते रहते हैं।